

24, 79. प्रतार्यमाणस्तैः MBh. 8, 1889. प्रतारित Trik. 3, 1, 17. MBh. 12, 4 160. BHARTR. 1, 77. PAÑKAT. 217, 2. PRAB. 14, 15. 29, 1. 32, 9. — 3) Jmd zu Etwas verführen, verleiten, bereden (vgl. सम् caus.): तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रतारितः (v. l. प्रचोदितः) RAGH. ed. Calc. 1, 9. प्रतारयन्तं ताम् — अन्विच्छन्तीं भार्यात्वे ततडुक्तिभिः KATHAS. 26, 243. — Vgl. प्रतरण, प्रतरीतर, प्रतार u. s. w.

— अभिप्र s. अभिप्रतारिन्.

— उपप्र caus. hinüberführen (mit dem Schiffe): (नावमा रोह्) तथै-पप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः AV. 2, 36, 5.

— विप्र caus. Jmd anführen, betriegen: विप्रतारित ÇATR. 10, 121.

— वि 1) durchlaufen, durchziehen, durchdringen: व्यर्त्तरिन्मतिर-न्दे सोमस्य रोचना RV. 8, 14, 7. सानु वि तिरूप्यम्: 10, 27, 15. 49, 9. 153, 3. वितरिरे infn. 104, 5. केतैव सन्न विधतो वि तारोत् 1, 73, 1. वृक्षस्पतिः पर्वतैभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे 10, 68, 3. उदधीन्वितीर्णम् (पशः) über Meere gedungen (Sr.: ad maris fundum pervenit) RAGH. 6, 77. — 2) weiterbringen, von einem Ort zum andern bringen; wegbringen, weg-schaffen: गतो नाद्या वि तिराति वृत्तं प्र ण स्यार्कभिर्त्रितिभिस्तिरेत RV. 7, 58, 3. व्राज्ञी न प्रीतो विशो वि तारोत् 1, 69, 5(3) hierher oder zu 1. वि मित्र एवैरारतिमतारोत् TS. 1, 8, 10, 2. वितरीर्णतर ferner liegend Nir. 8, 9. — 3) verlängern, steigern: अन्तासौ अस्य वि तिरति कामम् RV. 10, 34, 6. एना वयो वि तार्यायुर्जीविते 144, 5. — 4) gewähren, verleihen, geben: विताराम्यवुर्दं गवाम् MBh. 1, 6385. 2, 1614 (med.). 2410. 3, 3053. 3057. 11981. शतं च किल पुत्राणो वितरीर्णम् (gewährt so v. a. zugesagt) 1, 4498. R. 2, 22, 15. देव्या — वितरीर्णवक्रसंपदा KATHAS. 21, 181. 26, 279. RAGH. 14, 81. PAÑKAT. I, 12. BHAG. P. 7, 4, 2. मात्रे — विद्या-म् — वितरिष्ये 3, 24, 40. 23, 7. 4, 20, 25. तस्मै — व्यतरच्छेखं लेखाधिका-रिणा RĀGĀ-TAR. 3, 206. वितरीर्णजुलीयकम् 6, 35. राजवितरीर्णेषु विविधे-घासनेषु so v. a. anweisen R. 2, 1, 34. तस्माद्द्वारं वितारम्येष वन्दो die Thür d. i. den Einlass gewähren MBh. 3, 10650. उत्तरम् eine Antwort erthei-ten PAÑKAT. 127, 21. दृष्टिं ते वितारामः wir gewähren dir unsern Anblick MBh. 3, 1681. मारीचस्ते दर्शनं वितरति ÇĀK. 108, 18. अश्वद्राज्ञा वितरी-णीवसरः RĀGĀ-TAR. 5, 353. vergeben: वितरीर्णं सर्वस्वे BHARTR. 3, 86. In der medic. Sprache verabreichen, eingeben (Arzeneien); anwenden: कृ-दितवतः सायं प्रतशीतं क्षीरं वितरेत् SUCR. 2, 165, 16. 56, 15. 221, 15. 439, 21. वितरे च यथादायमभिव्यन्दक्रियाविधिम् 337, 9. — 3) vollbringen, her- vorbringen: नाराधनं भगवतो वितरति BHAG. P. 3, 15, 24. वितरति (धृत्- रामशरीर) दिनु रणे दिक्पतिकमनोयं दशमुखमैलिबलिम् Gtr. 1, 11. ज्यो- त्स्त्राशङ्कामिह वितरति Kir. 5, 31. तडिछेखालदमो वितरति पताकाव- लिरियम् PRAB. 79, 14. समरवर्माद्यैर्वितरीर्णसमरो ऽसकत् Schlachten lie- fern RĀGĀ-TAR. 5, 135. वितरीर्णाङ्कृति 2, 107. वितरीर्णकरालम् (von der Sonne) 3, 220. ТРОУЕR übersetzt an den beiden letzten Stellen वितरीर्ण durch dispersé, expansif (also = विस्तीर्ण), indem er das Wort mit अङ्ग und कर verbindet, während wir es zum folgenden nom. act. ziehen. — caus. 1) durchfahren, durchziehen (mit dem Kamme): गोदानम् ÇAT. Ba. 3, 1, 5. KĀTJ. ÇR. 7, 2, 9. — 2) ausführen: यथासवनं वितारयति (प्रेषम्) ÇĀÑKH. ÇR. 7, 1, 4. — intens. abwechselnd vorwärts streben, — sich bemühen: वि तर्तूर्यते मधवन्विपश्चितो ऽर्षो वियो जनानाम् RV. 8, 1, 4. abwechselnd treiben: समानमर्थं वितरिरेत्रता मिथः 1, 144, 3. — Vgl. वितरण, अवितारिन्.

— सम् 1) übersetzen, durchschiffen, über Etwas hinübergelangen (eig. und bildlich); mit dem acc.: पद्ङ्गत्वा भरताः संतरीयुः RV. 3, 33, 11. अस- कृञ्चायि संतीर्य हूरपारं भुजस्रैः MBh. 1, 5887. संतारत पुनस्तेन सेतुना म- करालयम् 3, 16583. संतीर्य गङ्गाम् 13, 1977. HARIV. 5329. R. 2, 71, 1. 4, 44, 79. 6, 9, 16. BHARTR. 2, 4. RAGH. 12, 60. कुञ्जवैः संतरन् जलम्, कुपुत्रैः संतरंस्तमः M. 9, 161. कामलोभग्रहाकीर्णो पञ्चन्द्रपञ्जलो नदीम् । नाथं धृ- तिमयीं कृत्वा जन्मडुर्गाणि संतर ॥ MBh. 3, 13772. 5, 1553. चित्तशोकम- क्कृद्दम् — प्रज्ञया संतरति 12, 11161. कलिङ्गानां पाण्डवानां च वाहि- नीम् (Fluss und Heer) । संतारत सुडस्ताराम् 6, 2337. सर्वं ज्ञानस्रवेनैव वृ- जिनं संतरिष्यसि BHAG. 4, 36. दुर्गाणि संतरेत् M. 11, 43. MBh. 13, 3371. einen Weg zurücklegen, durchziehen: सं पूषन्नधनस्तिर RV. 1, 42, 1. hin- übergelangen zu: शोकस्यास्य कदा पारं राघवः संतरिष्यति R. 5, 35, 5. Ohne obj. übersetzen, glücklich hinübergelangen: कतरेण पथा — संत- रिष्यामहे R. 1, 36, 4. संतरस्व 5, 35, 7. संतीर्य 2, 46, 29. संतरमाणस्य रथ- मेवं पुपुत्ततः MBh. 12, 8657. शुकसामान्यां संतरंत्तो यज्ञभिः VS. 4, 1. जगत्यो संतरिष्यति HARIV. 3058. mit einem abl. glücklich herausgelangen, sich retten aus: संतीर्णो विपदण्वात् RĀGĀ-TAR. 4, 528. संतीर्णः सर्वसंसारान् MBh. 12, 9054. — 2) Jmd übersetzen, glücklich hinüberbringen, retten: श्मे नः संतरिष्यति MBh. 13, 4155. — caus. 1) Jmd übersetzen, glücklich hinüberbringen, retten: गङ्गा तु नौभिर्वह्नीभिर्दासाः संतारयन्तु नः R. 2, 89, 8. 22. अस्मिन्नागीरधीतीरे सुखं संतारितो मया 86, 21. नौस्त्वा संतारयि- ष्यति MBh. 12, 2488. स कृत्वा प्लवामात्मानं संतारयति तावमौ M. 11, 19. दौहित्रो ऽपि क्षुमुत्रेन संतारयति 9, 139. MBh. 13, 3422. 3957. R. 5, 37, 13. व्यसनात् MBh. 7, 52. दुर्गे संतारयिष्यामि यत्राशक्तो भविष्यतः 3, 10857. — 2) Jmd in die Irre leiten, anführen, betriegen: मन्त्रिभिर्मन्त्रकुशलिरेन्दः संतारयते नृपः KĀM. NĪTIS. 14, 4. — 3) Jmd zu Etwas verführen, an- stacheln: संतार्यमाणसकृत्पित्रा (lies: संता° und vgl. प्र caus.) MBh. 14, 2310. — Vgl. संतार.

— अनुसम् bis an's Ende nachgehen: अचिक्त्वं तनुमनु सं तरेम AV. 6, 122, 1.

— अभिसम् übersetzen nach: स्वर्गं लोकम् AIT. BR. 1, 13, 6, 6.

2. तर m. = स्तर Stern: शतं श्रुतासं उन्नतौ दिवि तारो न रोचते VĀLAKH. 6, 2. — Vgl. तारा.

तर (von 1. तर) 1) adj. oxyt. f. ई gāṇa पचादि zu P. 3, 1, 134. übersetzend, hinübergeliegend; überwindend, besiegend; als Beiw. von Çiva MBh. 12, 10380. — 2) m. a) parox. das Übersetzen: श्रमयः सरयस्तराय कम् RV. 2, 13, 12. 8, 83, 1. M. 8, 404. 407. MBh. 12, 2624. नदी° JĀGĀN. 1, 139. तरपण्य Fährgehd A. K. 1, 2, 3, 11. H. 879. दीर्घाधनि यथादेशं यथाकालं त- रो (= तरपण्य) भवेत् M. 8, 406. उत्तेहरतरान्दान् nicht zu passirende Flüsse BHARTR. 7, 55. तर = तरण MED. r. 40. ÇKDr. und Wils. fassen तरण als m. in der Bed. Floss auf. Die Bedd. a road bei Wils. und Feuer (कृशानु angeblich nach MED.) im ÇKDr. sind sonst nicht zu belegen. Die Bed. Baum (Bṛṣīpa. in ÇKDr.) beruht auf einer Verwechslung mit तरु. — b) ein best. Zauberspruch zur Bannung von Geistern, die in Waffen hausen, R. 1, 30, 4. — c) N. pr. eines Mannes RĀGĀ-TAR. 7, 809. — 3) das Suffix des compar. schliesst sich an Bed. 1. an. तरतमयो- ग्युक्तोश्च भावानतिरुतानतिस्त्रिगधान् — इत्येवमादीन्विश्वर्यते SUCR. 1, 75, 11. तराम् häufig als Steigerung an adv. gefügt; vgl. तारतम्य. —